

DPN 6798

Title : बौद्ध स्तोत्र BAUDDHA STOTRA

Run. No. 2523

Cat. No.

Micro. No.

Subject स्तोत्र Hymn

Religion : Hindu / Bauddha ✓

Language : Skt. / New. / Nep. / Skt.- New. / Maith.- New. / New.- Nep. /

Size in cms. 25 X 16

Folios 28 Lines (in a page) 11

Compl. / Incompl. ✓

Chapt. / act /

Author / translator

Scribe / donor जोगवज्र वज्रचार्य ✓

Date: NS / SS / VS / KS

Ruler / place Joga Bajra Bajra charya

Script : New. / Dev. / Bhuj. / Ran. /

Illus. :

Material : palmleaf / paper / thyasaphu / one side yellow ✓

Condition : fine / damaged by worms, rats, water / stain ✓

Beginning, colophon, post-colophon :

१. स्तुतमपि

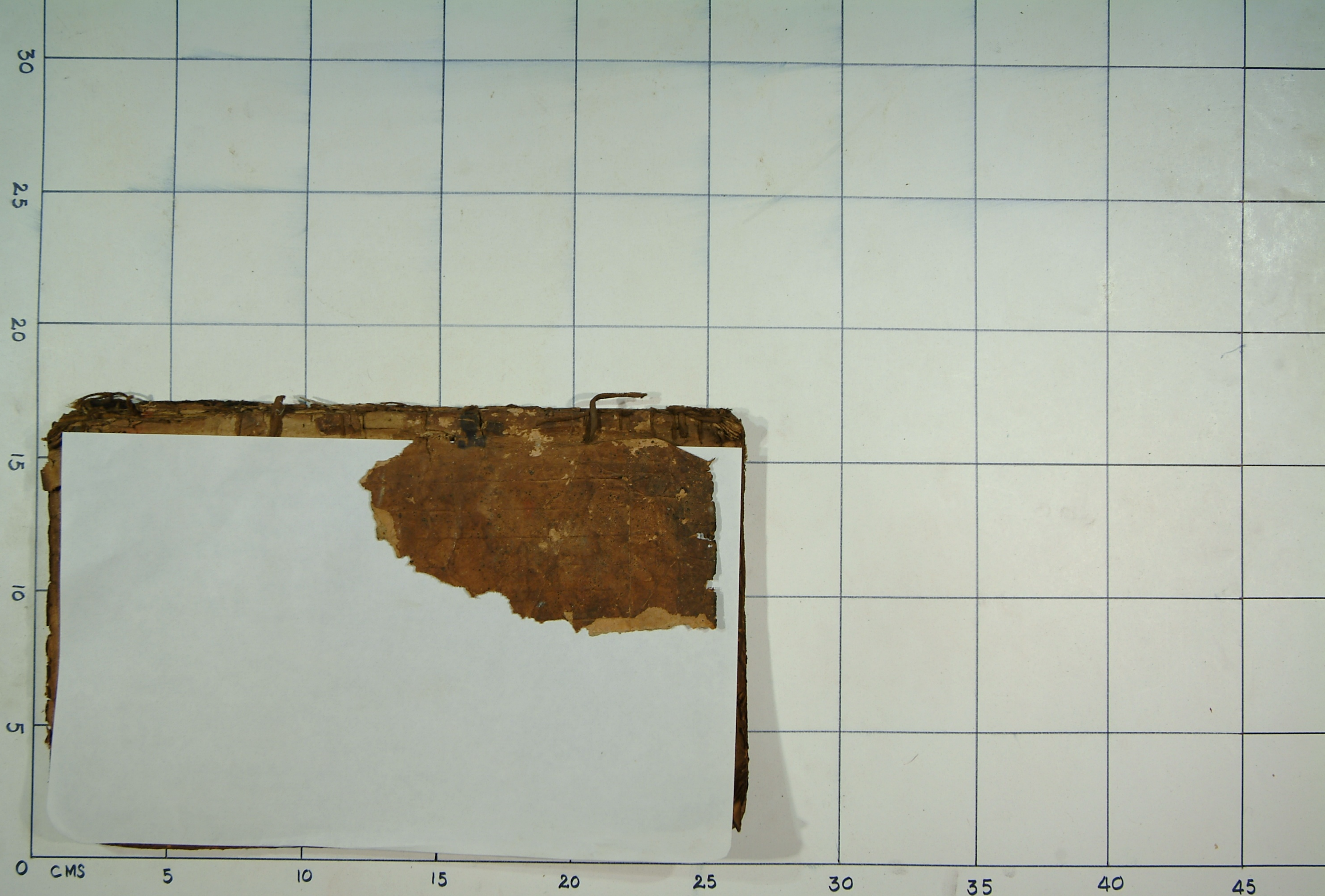
२. सिद्धिमुनि

P. T. O.

३. मध्यगत
 ४. उत्तिमञ्जुशी तेषां
 ५. उत्तिमञ्जुशी बोधि
 ६. अतसिक्
 ७. असुर सुर
 ८. क्षान्तिधनि
 ९. कामुनि पर्वत
 १०. भुवनत्रय
 ११. करुणा तव
 १२. वन्दे श्री
 १३. आराधितो
 १४. नजातो
 १५. आपोतर
 १६. दारिद्र्यं
 १७. धर्मधातु

१८. वगतजनी
 १९. गोपुच्छ पर्वत
 २०. वृक्षादिदेव
 २१. इन्द्रादिदेव
 २२. भैलोक्मनाथ
 २३. अपधन
 २४. चामिक्करा
 २५. अरुणावरुण
 २६. देवमनुष्यां
 २७. विश्वविन्दु
 २८. मञ्जुश्रीकृत
 २९. मंगलाचरण
 ३०. स्वस्तिवाक्य

Col. लिखितं धर्मिणि तोन
 क्काथ वादात्तस विज्जाक्कहा
 श्री वज्रसूत्रार्थं जोगवजनं
 लिखापिता याना जुग शुभैः ।



वया मे पुनमिह सिद्ध
नमो धर्माय ४३ नमो संघाय ४
पथल संघे सिद्धिग धर्माय ॥ दि
मरुमपि कुरु सकी ॥ नोमि संवत्
पयांति दिहिलख १ कपित्त इलित

कवर्ष सुपुत्राय नमः ॥ स्याच्च यपः
दधव नवनिशं भुपुत्रं पुरातं ॥ १ ॥
कंठ ॥ विदुवन हित कर्मु लीलतां जपहं
नसिप ॥ दधव नमः ॥ २ ॥ अथ यथुग
नमः ॥ लोक भूषी कसद ॥ सपि
उदयगिनि ततल
नाय विपनिम
नपां रूणीतल
सुविगत मदल
न. धाउ भं राध
निसपि
ने

॥ डि
सुनय
कामपंकावि
नांक ॥ शुभति
विमलनमकाः
॥ पसुपातिपयि
॥ सुत ॥ रुतांसा ॥ दधव
॥ नांका ॥ इट कथिन रुतांसा
साहता नवनिकाधन ॥ दधव ॥
थांविप्रहका ॥ विगतमदेवति ॥ सत्यदागि
नियानमका ॥ दधव ॥ १३ ॥ अरुसि

॥ सुकीकजा ॥ नवनपिनवपूषा ॥ खत्यदागीचहं ॥ डीनय
॥ कुमाया ॥ दधव ॥ १४ ॥ असुनवसनहिना ॥ निमूजागन
॥ धका ॥ नपिन ॥ दधव ॥ इहयगितिनिहिना ॥ नपिनग
॥ १५ ॥ मधययीहमहाया ॥ हंसविप्रगिनाया ॥ कट
॥ निक ॥ अंग ॥ ६० ॥ आधि ॥ घनसुतांक ॥ माहिताकपिसु
॥ नवपूषा ॥ कुमाया ॥ रुतांसा ॥ दधव ॥ दिवितुविगा
॥ ६० ॥ आधि ॥ घनसुतांक ॥ मधितंकपिसुका ॥
॥ म ॥ एतामाहका ॥ रुतांसा ॥ मूनिक्पिय
॥ हिना ॥ वाविधकपिसुका ॥
॥ ॥ रुतांसा ॥ विसायसुयन
॥ रुतांसा ॥ रुतांसा ॥ रुतांसा

यं रुफीं वरुं जीनय
 न के यत गुभनिभ
 नमृ सं च ल पूच मृ सनं कि
 पून पुरातं पून ल व धि त प वि
 पुन पुरातं सुनं क उं शीया प धि नं दि तं वृ ध
 मि दि न दि न ॥ १२ ॥ दुहा ता का गु म स म मि
 ने द यं रु त या ग ध र व रु ज नि प स तं डी यं नि स्य हं
 जि तं र व म य त न र ह र्धि ता द भ व न श्रु म त
 ॥ ६ ॥ किं शी मृ य सं म स वृ ध रु ग क य क स द भ व
 ॥ १२ ॥ १ ॥ अंत मा वृ द्वा य ४ ॥ सि द्धि म नि व य

समिप ३५

य ऊ यं क उ शी ध र्म ध रु वि चि त कं २ वा धि स त् महा स त् स्व यं रु चे स न ता मि
 हं १ ॥ ध र्म ध रु ध्वा न सं रु क इ ली रु र व वि ता सु नं २ ॥ क म नि त ल मृ ग
 न स्व यं रु चे स प का सि तं २ ॥ रु ति य रु गं रु द रु ति य ना म प मृ गि पी त
 व स्थि तं २ व रु क ट क य र्ध गी गी वि ए म प रु गि नि वि धि रु कं २ ॥ वि पू ज
 वि र्हि त महा पू क य वि म य नी त स यं जि तं २ न पि नि कं लु ल शु गं ध क रु
 न दि व क स म स र्हा रि तं ४ ॥ स क रु प मा न स रु ध म द ल प ल म य रु
 कि ना जि तं २ हि न य रु स य वि चि त ना र्थ स्व यं रु चे स नि वा सि तं ५ ॥
 ध व ल व प र व न क य र व ता य न वि धा य ता च न सं द यं २ च रु य म य कि नी
 ल पि त य क प रु स न जा रि तं ३ ॥ ना ना क स म व र्ध मा रि त रु नि न दि व रु
 स्व रि तं २ च रु चं प क ना ग क भ य य क ना य म ना ह यं १ ॥ ना ग गं ध र्व य रु
 कि न य ग य रु म नि रि कृ वा रि तं २ पू ध ल म मा रु वां रु क वि वि धि उ प

[illegible]

चजिनवननं ॥ १ ॥ पूर्वदिगंतविजयंसिद्धिं श्रीश्रृंकासजिनवननं ॥ हस्तिमा
सनस्थितनीलवननं ॥ नमाम् ॥ २ ॥ दक्षिणदिगंतविजयंसिद्धिं श्रीप
त्रसम्भवजिनवननं ॥ कुयंगमासनस्थितपीठवननं ॥ नमाम् ॥ ३ ॥
पश्चिमदिगंतविजयंसिद्धिं श्रीश्रृंमृतां हवजिनवननं ॥ मयूयमासनस्थि
तयकवननं ॥ नमाम् ॥ ४ ॥ उत्तरदिगंतविजयंसिद्धिं श्रीश्रृंमाघसि
द्धिजिनवननं गयूडमासनस्थितस्यमवननं ॥ नमाम् ॥ ५ ॥ हृषिकेशवं
मासकयनागङ्गकसुनासुनं ॥ वक्रविविधितोपहृषधधितं ॥ नमाम् ॥
३ ॥ ॥ ॥ तिथीपंचवङ्गगितं सप्तसमाप्यं ॥ ६ ॥ ३ ॥ ॥ अंतमावृत्तयः ॥
उत्तिमं श्रीनेपालसंक्रादि उहयस्थितस्वयं कचे ॥ १ ॥ तटिस्काटिदवपन
मामिधर्मधुक्तिनाययं ॥ १ ॥ नमामि वृद्धं तं तावनाथं सकयजगतगु
पू॥ सामकिताचनिपश्रुतितायां चजिनधुमं धलं ॥ २ ॥ वृद्धदधवत

तवनिशंयुं धकायगुनादधिशाहमाहविषयकामसर्वकृदितवाक्यसिद्धि
॥ ३ ॥ पूर्वमरणीहस्तिवाहनः ॥ ४ ॥ नीलवर्धदहा ॥ अनगदवगनमा
पनिर्जितवर्जसुनधीश्रकार ॥ ४ ॥ दकिनमरणीकुपंगवाहनः उदित
सुवर्धदहा ॥ विविधियत्रसंपन्नदायकं नमामिधियत्रसंरुवं ॥ ५ ॥
पश्चिममरणीमयुजवाहनः पयनागजाटिदहा ॥ श्रीश्रमृतांरुवकयून
मयः सर्वलोकपतिपात्रित ॥ ६ ॥ उरुमरणीगजुवाहनः हवितवर्ध
दहा ॥ सुफलनिस्रुवावधीश्रमाघसिद्धिगुनविद्यादायकं ॥ ७ ॥ धर्मध
उमधुनमामः रुतिकवर्धदहा ॥ सिंहवाहनः ॥ नमः नृकिः तेषां कनाथ
धीवेषां चनं ॥ ८ ॥ वृद्धवृद्धसमयनिशंक्रान्तिसपयनाजितं ॥ ९ ॥ गतपा
पिदकयूनमयः सर्वदेवगक्षसिनामनि ॥ १० ॥ धर्मदानवश्रुतकीपतिरु
यस्य क्रादिपसम्पत्तं ॥ पापनासयवृद्धस्य तं मक्तिपयवयदहिम ॥ १०

नमामुख्यं त्वं चैव धर्मश्च कुलं चैव ॥ ११ ॥ विविधियत्नं वज्रं लपनं सुवर्धमूखं कृतं
पूर्व ॥ १२ ॥ कृतं कांतिपापहृत्तं सुरुलं वक्रं नृत्तं ॥ १३ ॥ दवमनिलि
कृतं पापवक्रं नाहं सुनं कृतं सफमि ॥ १४ ॥ सुखं संपूर्णं आयु
मृत्वा एव संपदं ॥ १५ ॥ ॐ ति चैव धनं सुवक्रं संपार्कं ॥ १६ ॥ ४ ॥
ॐ नमो वक्राय ॥ १७ ॥ उक्तिं चैव धनं सुवक्रं संपार्कं ॥ १८ ॥ ४ ॥
ॐ काटि चैव सुवक्रं संपार्कं ॥ १९ ॥ ४ ॥ सुवक्रं संपार्कं ॥ २० ॥
कायगुणं चैव ॥ २१ ॥ दानं चैव सुवक्रं संपार्कं ॥ २२ ॥
पारुमाह विरवय कामनागद्वयविनासने ॥ २३ ॥ पक्षपक्षवत्तनवर्जितं
सर्वं संहितं कृतं ॥ २४ ॥ दवमानवक्रं वक्रं गयुक्तिं नमहायुगं
२५ ॥ दवमानवक्रं सुवक्रं लतिर्यकं पदमयकं सज्जानिकं ॥ २६ ॥ वक्रं सुवक्रं

पितृपातं स्वर्गिनसृजितं १ गंधर्वानव-
 दिनं ॥ ५ ॥ इति भगवत्पुत्रकन-
 क्रूरकं धर्मकायमहावयं ॥ ३ ॥ सर्व-
 वलं १ पुत्रकं धुलमकूटकं हितमकूटपादसु-
 विंशतिः दत्तवत्तनभयकाटि सृजितं १ ग-
 प्ररुंगविधिं सनं ॥ ८ ॥ मायं गंगनयसु-
 धुवर्जनिवर्जनय-
 कं मर्जवाल्मज्जनिकं १ कन-
 ॥ १० ॥ दहिनविंशति-
 कस्य च न १ क-
 धमात्यविलपनं १

वृद्धवृद्धमलनि-
 यूप्राणसंपदं ॥ १३ ॥ इति श्री-
 ॥ ५ ॥ अंतमा-
 रलदागतविप्र-
 नयं ॥ ६ ॥ व-
 यत्तु ॥ ७ ॥ अ-
 तसुवर्धसंका-
 वि-
 अमृतां-
 त-
 ॥ १३ ॥ इति श्री-

श्रीसप्तमः ॥ ८ ॥
श्रीकृष्णसुखदयः ॥

॥ अतिशय ॥ २ ॥

कामनिर्घट ॥ १० ॥

॥ वनं य ॥ ११ ॥

निरुतं हृदि विस्मयं हंसमग्नं शून्यं किं स कथं स्वविना सयंति ॥ तं यमपासि
 नयकानि समंतमामि ॥ ७ ॥ संतासय निजमप्यकुरु नरुमिह धर्मनाकुमि
 वम्रागत कामपि शून्यं कर्मरुमि मिबधं सिततनमिहं ॥ तं यमपासि हंस
 सततं नमामि ॥ १ ॥ गत्वां च ऊनमृपि पूयमना हयायं तं लाकनाथ मूरुयक
 न सर्वसत्त्वा ॥ २ ॥ धानवत उस्त्रा मि विमकि ३ ॥ रवं ॥ तं यमपासि हंस कविषं
 नमामि ॥ ८ ॥ वंथत लाकगत ऊक पूना उभनं ॥ ९ ॥ विमखंडय पर्वत कि
 र्धमग्नं शून्यं खपिं दितसनी लूषा दुनानं ॥ तं यमपासि शीखना स कयं न
 मामि ॥ ९ ॥ मृन्यान्यरु कूष पिष्ठित पत सत्त्वा संपीयत कयून हृषवत नदि
 हि १ ॥ पूसिं सनी लूषा दुषां दुनानं ॥ तं यमपासि हंस कूषा दुखं नमामि
 ॥ १० ॥ गत्वां तम हवनवर्जित चन्द्रसूर्य चिकाम सिद्धा लित यत्न प्रहवरास्य
 १ ॥ शून्यं कूषा दुषां दुनानं ॥ तं यमपासि हंस कूषा दुखं नमामि ॥ ११ ॥

गत्वां च ऊनवतिरुममनपथस्य ऊदियत रुतमनूत यपिं शुपा उ २ ॥ धर्मकथ
 नयपिहं पिंरुत नवदं ॥ तं यमपासि वयमददं नमामि ॥ १२ ॥ गत्वां च ऊनदि
 विहं दयदवपुं दानस्य हि नरुध पिं दित इधितं च २ ॥ तं यमपासि यत्री पूर
 समृधियन्तं ॥ तं यमपासि धनवृधिकयं नमामि ॥ १३ ॥ तं कामपूयमपदं हि
 तनाकुसि हि कामावस्य न च पिंरुत वनाकुसि हि २ ॥ यतस्य चिरुपयि वर्जि
 तधर्मचिहं ॥ तं यमपासि वरूयधयं नमामि ॥ १४ ॥ विस्मम उरुमि कि
 मिकाटि समरुवंति ॥ गत्वां च ऊनमृलि लूपमनू समयनि २ ॥ निस्त्रा पिंरुत यून
 पूना यददं हि धर्मं ॥ तं यमपासि वरूयधयं नमामि ॥ १५ ॥ इति कूषा
 दपि ॥ १ ॥ हृषयूयुसि कूषा दुषां दुनानं ॥ तं यमपासि वरूयधयं नमामि ॥ १६ ॥ वाया ह
 वरूविधिसमृधियन्तं ॥ तं यमपासि वरूयधयं नमामि ॥ १७ ॥ वाया ह
 मृषरुत यूपमहा ऊन उहुंग ऊनवतिरुं हयगा कसि हि १ ॥ मृषरुत

[illegible]

सकलानि स्यान्माकसो कसदायकं २ माहनं सर्वमानां माकायंतनसत्त्वैः
॥ २ ॥ वृक्षानमदिसंधाजं वृक्षनां जनमयकं २ वृक्षनिकषणीशुद्धवृकायक
नसत्त्वैः ॥ ३ ॥ धर्मवाधिसंततधर्मधुगतिंसदा २ धर्मानां यजमाध
र्मधकायंतनसत्त्वैः ॥ ४ ॥ ऊभानास्ति तथानास्ति ऊभानास्ति तथानिय २
यथावादितथाकाप्रिऊकायंतनसत्त्वैः ॥ ५ ॥ पथशक्यमिदं पूष्यपि
उपायनासंत २ उत्तरं तदिवाजो हजायंतियजमगति ॥ ३ ॥ ६ ॥
पंचक्यगितसु संसमापं ॥ ७ ॥ १४ ॥ अंनमालाकनां धाय ॥ कांया
तत्रचवहमिविऊयनपालंबकृजादादधमृनादृहिमाकना ॥ १ ॥
मृजादितधीवृगमल्लाकस्वयं २ गुयबंधरूपपुष्पानि २ उदवं ॥ २ ॥
यथंचकुमयाऊगागमनं प्रिहायूचि २ पूजितं सर्वपांनिहेलाकनाथं ॥
२ ॥ ऊनरुगतिऊनमाकषकाता २ पादं पंकजऊला एव नोमिसिजसांतं ॥

30
25
20
15
10
5
0 CMS 5 10 15 20 25 30 35 40 45

उजिउपं ११

॥४॥ ॐ तिथी कां पातयति चतुर्दशमासं ॥ १५ ॥ ॐ नमो ब्रह्माय ॥ उ
जिउपं के समनं संसा नाक्रमहादध ॥ २ ॥ तिहं वामनसूति ॥ अहिमाहना
गतं ॥ १ ॥ तिमिनागजविद्याहं मूनाथरः खद्यदिनं २ वंधवधपविष्कं ॥ अ
हि ॥ २ ॥ मातपितिहं गिन्यादिपूजयस्सुजना २ ॥ ३ ॥ उजालामयादृष्ट
अहि ॥ ३ ॥ ऊर्मयापविजनाथं सुहृत्तं चमरुहं २ ॥ ४ ॥ काकिनयचहं ॥
अहि ॥ ४ ॥ जिह्वक्यामहाधपं नवग्रहसगात्र २ ॥ ५ ॥ अंधतामहं नाथं
अहि ॥ ५ ॥ जिह्वनोकासमाज्जामहासागात्रं घन २ ॥ ६ ॥ संघाचमया
दृष्ट ॥ अहि ॥ ६ ॥ धर्माधर्मनविहृतगम्यगम्यनवदिनं २ ॥ ७ ॥ अचनमिदं
काष्टं ॥ अहि ॥ ७ ॥ हारुघातादिकपंचमनन्ययमहाज २ ॥ ८ ॥ पंचनिन
जकपात्र ॥ अहि ॥ ८ ॥ हतामयापुपहं ॥ ९ ॥ भंगिका ॥ अविनासितं २ ॥ १० ॥
मयासत्त्वहिंसा ॥ अहि ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ हलाकसखहिनं पयसाकनवदिनं २ ॥

धर्मधुसुयं १८

विक्रमसूदन ॥ अहि ॥ १० ॥ कासिपुष्ययथाकासिउमतवायुनाहतं २ ॥ ११ ॥
भंडिवितममु ॥ अहि ॥ ११ ॥ अतविकंधकाठनावरुविक्रसमाकला २ ॥
सूतनं नातपस्यापि ॥ अहि ॥ १२ ॥ अनयनाधपसवाहताकाधुमगमया २
नजानां माउदामन ॥ अहि ॥ १३ ॥ नजकपंचमानस्य कश्चिजानविदं
तं २ ॥ मंछमिकम्यसुनं ॥ अहि ॥ १४ ॥ वेद्यानवेद्यनाकत्वं सर्ववाधिविकि
मितं २ ॥ नाकनाथरुजुताउलाकसचनचयं ॥ अहि ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॐ तिथी
नयकाधयताउं समा ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॐ नमो ब्रह्माय ॥ धर्म ॥ अकुष्यंरु
धीदवदानववंदिनं ॥ नागयक्रुर्मवंदिनसत्त्ववंदिनमामुतं ॥ १ ॥ नमामु २
पंचवृक्षगुनामयपकासितं २ ॥ पंचकायसर्ववन्दितपंचवृक्षनमामुतं ॥ २
॥ वर्षकादधहिनविष्टिरुसर्वसत्त्वउधपिता २ ॥ विष्टिकयथासर्ववाधितसर्व
भूतिनमामुतं ॥ ३ ॥ ॥ ३ ॥ ॥ अनकाययागवकमाककायपकासितं २ ॥ वृक्षका

यधर्मकायसंघकायनमासुतं ४ ॥ पंचमयुक्तिः ॥ अतनीलपियकमनाहना
 २३ काधयस्यामसाहितवर्धपंचनमासुतं ५ ॥ चन्द्रमंथुलमध्यासंघी
 पंचजिनपकासितं २ ॥ दिदभरुमिसुयनार्थपचवृद्धनमासुतं ३ ॥
 श्रीदधयतिपात्रिवनमासुतं २ ॥ यययकायकं २ ॥ यधमामिधर्मजाजं पूषका
 यनमासुतं ७ ॥ वक्रविधिपूषाविस्तिनसर्वदवनपूजितं २ ॥ वन्दिप
 जितमासुतं ४ ॥ यययकायकं २ ॥ यधमामिधर्मजाजं पूषका
 यनमासुतं ७ ॥ वक्रविधिपूषाविस्तिनसर्वदवनपूजितं २ ॥ वन्दिप
 धानमनाहनं २ ॥ सर्वदवागधवासितं सर्वदवनमासुतं २ ॥ सर्ववन्दि
 नकायजिनहववन्दिपूषाहलं २ ॥ जिनिद्रुःखपायनासुतं २ ॥ वक्र
 मययजितं ५ ॥ १० ॥ गीतवन्दिपथीतिनिहमहाजयपूषाहलं २ ॥
 मवंधनगहवंधविप्रकृतिविनासितं ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥
 जं समाकं ४ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥ ११ ॥

जगत्तजनि १२ ॥

माताष्टिसंहायकायिनी २ ॥ सहजाननजयकासितं २ ॥ समयनयपि
 नी ॥ ४ ॥ वज्रजिनीनमासुतं ४ ॥ जजिनमासुतं २ ॥ नीलसादानमासु
 तं ४ ॥ जगतायानमासुतं १ ॥ कायाकृतिवन्दमधुलजकवर्ममध
 स्तिनं २ ॥ अष्टहेलवगाधजिनीलाकययनसहितं २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
 पदवीकृत्कययधनीनि २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
 नि ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥ २ ॥
 धविनीदवीतिधुलं मयवजनी ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
 श्रीपीथनिवासिनी २ ॥ वक्रहविहय ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥ ४ ॥
 ॥ नातावर्धयपधविदवीहसिचर्मपयिहलं २ ॥ हायसातिमन्मालाज
 त्रमानामनिहविनी ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥ ३ ॥
 वासितं २ ॥ सकयसंसायनयनिमाताजगत्संसाय ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

मवडनसंगंधपूषा धूपनेवयमपतिऊयना समधुवजयं॥६॥ उचमल
 संहितं॥ ८॥ वज्रजगिनीनमामुतथीयकजटिनमामुत२नीलसादानः
 नमामुत॥३॥ उगुतपानमामुत॥ ९॥ ॐति॥३॥ कजटिवज्रजगिनीनवनी
 उंसमाफं॥ ६॥ १८॥ ॐनामावकाय॥॥ वपूकूपर्वतसंस्ति॥ तमर्धियं
 चवृक्षपभसूनसूयं॥ संरुनाथं॥ नमपादकमल॥ १॥ चउसवर्षसं
 सूर्यसूतजंहनसूवृद्धितवाधितसं२पादसूखभुहिनाथसं॥
 संरुनाथं॥ २॥ वंमविद्वन्डमहसूयदवं॥ ३॥ उरुमजकवपूनाग
 हो२वायूमृगिनाकसिबंदितायं॥ संरुनाथं॥ ३॥ सर्वतथागतवा
 धितसूतहिक्कुरिक्कुरिपूजितपादं॥ २॥ मृगिसर्वदितामानऊनाऊ
 संरुनाथं॥ ४॥ दापिउरुःखविनासनकर्हनागलउदयमाकसूदा
 ता२मार्गसूदभकंवाधितनाथं॥ संरुनाथं॥ ५॥ ॐति॥३॥ स्वयंरुगी

एवपूकूपर्व॥२०॥
 कामपिपर्वतपायः॥

ताउंसमाफं॥ ६॥ १९॥ ॐनामा॥३॥ मंरुनाथय॥॥ वंमदिदवमनऊ
 भुजपूजितांगरुनाधिपं॥ गुधमयं॥ गुनविर्यवकं॥ वागि॥३॥ भुलपुसूततंन
 ममि॥ १॥ वदादिसिपचताधिलमकुविहं॥ संकथादिविनस्यषुगीद
 संहं॥ कितयं॥ तीरुवननचवागिविहं॥ वागि॥३॥ २॥ सनपदा॥ नसलित
 नमचिं॥ वृद्धिवाचस्यचिं॥ विविविध॥ भुवर्हदकसूतलं॥ तीरुवननचवाजं
 जल॥ वागि॥३॥ ३॥ जहादिसिपतिकं॥ पप्रिपूरुहं॥ यंचिरुविचिं॥ विरुगु
 नं॥ नमाननीयं॥ सर्वरुकाकधनाहिनिउमूयं॥ वागि॥३॥ ४॥ चयविधि
 यविपमिथि॥ यविधं॥ वृद्धि॥ नमधिपं॥ विविविध॥ भुवर्जनीयं॥ विद्यापतिसूत
 गुनरुवननपूरु॥ वागि॥३॥ ५॥ वागिपतिरुऊचत॥ यवामचायं॥ पू
 र्णकृपा॥ मनसिसं॥ सततं॥ उधनं॥ दुयं॥ नमानमनभा॥ चपनादिहिहं॥ वागि
 ३॥ ॥ ॐति॥३॥ वागि॥३॥ यवन्दनामं॥ उंसमाफं॥ ६॥ १९॥ ॐनामा

वंमदिदव॥२१॥

श्रीसूर्यदेवधर्मधनुःपुस्तकम् ॥ १ ॥ वज्रलनिधिमायमनिनायकसंस्कृतं ॥
 सहस्रदलपत्रसंयोजकनिकायसंसाहितं ॥ १ ॥ नमामि श्रीसूर्यदेवधर्मधनुः
 जगतदिग्भूतं ॥ जगतव्यपितजगतनार्थजगतपात्रिवाधं ॥ २ ॥ वज्रकणः
 प्रासूयैवसमूहवसंस्कृतं ॥ दिव्यसूटिपत्रसंयोजकनिकायसंसाहितं ॥ ३ ॥
 पंचवर्णजिनपंचमजापध्वंस्निर्मलं ॥ स्वतन्त्रलहमयकस्याम
 पंचनमामुतं ॥ ४ ॥ सुजासूत्रनयनचिह्नं ॥ वन्द्यं चयनं मयं ॥ उत्तमल
 ह्वरवपितसर्वपापविनाशनं ॥ ५ ॥ मंरुधीप्रजितसर्वगुणविधि
 हं ॥ तथागतनागवासंस्कृतं ॥ हवस्तुपिता ॥ ६ ॥ उत्तमपूषकमयउत्त
 यकमंदकज्ञानसंज्ञितं ॥ हवस्तुपिता ॥ ७ ॥ उत्तमपूषकमयउत्त
 ॥ ८ ॥ श्रीनयातनिर्मजलसंपत्तिस्तथा ॥ अनगदवालयहमिष
 सिद्धिजटिपूषनिर्वाहितं ॥ ९ ॥ नानावृक्षगर्भाधिकमयचंपकसाहि
 तं ॥ पालिजातककुंदधवननागकणपसंस्कृतं ॥ १० ॥ अष्टधनुःअष्टजाति

नीमसूर्यदेवधर्मधनुःपुस्तकम् ॥ ११ ॥ अनगदवागनराकपयंकुपायगक्षसहितं ॥ १० ॥
 सूर्यदेवधर्मधनुःपुस्तकम् ॥ १२ ॥ अनगदवागनराकपयंकुपायगक्षसहितं ॥ १० ॥
 निमयं ॥ ११ ॥ गितसंघासासितसंस्कृतमनाहयं ॥ महाकुरुसिता
 स्वकृतसमाधिजीकककुंदनं ॥ १२ ॥ तथागतकलां गुधिअधिल्लनक
 वासितं ॥ वागमतिरिथसमाहवनिर्मलजपकासितं ॥ १३ ॥ कससंस्कृतव
 तिचेयसिधिनसंस्कृतं ॥ जनुध्वतजगसंगमसर्वतिथिसंगमं ॥ १४ ॥ अ
 नतिथेयसंताकविधिसकतं हलं ॥ नधर्मकाममाकं चपाफसखावति
 याप्रया ॥ १५ ॥ पुनविंदनदवल्हनावनककुपंचमि ॥ हनवपनयकालव
 तिधर्मधनुगीतसंपूर्ण ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥
 ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

30
2.5
2.0
1.5
1.0
0.5
0 CMS 5 10 15 20 25 30 35 40 45

30

2.5

2.0

1.5

1.0

0.5

0

CMS

5

10

15

20

25

30

35

40

45

आलतमतादयि श्रीकामिन् चरुवन स्वयं वृद्धयि ॥ संसायदा ॥ २ ॥ वदांतना
 दगुनसंवपकासितन ॥ गणी ॥ श्रीरुन स्वयं विष्णुयि ॥ सर्वनचंसकलपुस्त
 कश्रुमाता ॥ संसायदा ॥ ३ ॥ यपांचियंमससिक नकनासयपिवगिमनाह
 यस्तु ॥ जितपियूषांच निवायानयनयूरु नगस्यजाटि ॥ संसायदा ॥ ४ ॥
 संसायसायआचनाहवसपसानां देवानाश्रयसय ॥ धिपकिन्नानां वां
 कूमनायथंचवानसिधियं ॥ संसायदा ॥ ५ ॥ कस्यत्रियंगयत्रियं पित
 तासुनाय ॥ यथासुवाश्रुतचउतपूजितानि ॥ निरूपधमसिजसातआम
 कतावं ॥ संसायदा ॥ ६ ॥ संपूर्णकारवताश्रुक्रयसातदास्य ॥ पातायमध
 तिनसाहयपूजितानि ॥ मंजुदिवाक्यभक्तजीवितसर्वयकि ॥ संसायदा ॥ ७ ॥
 ॥ सचकपंमकुआहदितामंजुनाश्रुसुवाधसाधकजन ॥ सुगतिमवंचं ह
 नसमवसर ॥ खवितासयकि ॥ संसायदा ॥ ८ ॥ ॥ तिथी ॥ लदायतआका
 ॥ संसायदा ॥ ९ ॥

॥ १० ॥ २१ ॥ ॥ अंनभाभीमंरुनांथाय ॥ १ ॥ तेषाकनाथभीमंरुक्रमायामाहचि
 नम्रागतनिपायमभुत ॥ सयनचयनभीमिह ॥ तेषाकगुय ॥ वन्दितचयनहर्म
 रुक्रमाय ॥ १ ॥ तेषाकक्रमायतेषाकविधितेषाकसुन्दयमंरुभीयपं ॥ स
 यन ॥ २ ॥ कायवाकचिरुयायमाकपदातादपिडः खविप्रभाजनदका ॥
 सयन ॥ ३ ॥ छिचयनहितनउतहनदातासिद्धिदलपुसादातामाक
 पदाता ॥ सयन ॥ ४ ॥ दवासुनकुमननागागधर्वसर्ववन्दितसर्वपूजित
 नम ॥ सयन ॥ ५ ॥ ॥ वांदिदधश्रुपयाजितनार्थकयऊविहाथवदीतपा
 दं ॥ सयन ॥ ६ ॥ ॥ नयालसंवकुयासिघनदवंधुयसुधिमामंरुभीस
 यनं ॥ सयन ॥ ७ ॥ ॥ तिथी ॥ मंरुभीगीकमंरुसमायं ॥ ८ ॥ २४ ॥
 ॥ अंनभाशकनांथाय ॥ १ ॥ श्रुपयनकामनिधीनागसंरुवर्तिनाजितपाशिक
 हयसितवदनं ॥ १ ॥ श्रीवृगमस्वयश्रुदितिकनार्थ ॥ उगतनाथरुयंकनका

तेषाकनाथ २४

श्रुपयन २५

ननिहदयं ॥ १ ॥ श्रीमितां वसिष्ठं गतधनियं ॥ मृदंगमन्त्रिगितं वंससिधि
 नं ॥ २ ॥ पविसिदव्यसाधिलन ॥ वज्रवकुलुसिधिवजसुं ॥ ४ ॥
 ॐ तिथीश्रुपयनसुं समाकं ॥ ७ ॥ २५ ॥ अंनमासाकनां थय ॥
 वोमिकयावनिमनिमकूटावलिया ॥ विचिकविचिधितपनविहधितं ॥
 १ ॥ सात्तहयंकयहयकन ॥ सस्य ॥ नयमस्य ॥ लसविहवदनं ॥ २ ॥ ३ ॥
 कंयतमयकिहुरुहंतायनी ॥ कनाहिरयादधिसागयविदिनं ॥ ३ ॥ साहिरव
 सस्यप्रिहदनवन ॥ कमयनयनविकासितयमरवं ॥ ४ ॥ हायनागकुंजल
 विसिहवगत ॥ मासिमाधवसिहकिथिआगभन ॥ ५ ॥ ॐ तिथीश्रुपयनसुं
 समाकं ॥ ७ ॥ २६ ॥ अंनमासाकनां थय ॥ अयनवयनदहसु
 पसिउसंरुवदहिनयंतपयामकमधयं ॥ १ ॥ श्रीवगम्यस्यश्रुयय
 दाता ॥ सत्तडधयनइरुतिहयनं ॥ २ ॥ घटगतितायनमाकयदाता ॥

जामिकना ॥ २३ ॥ अयनवयन ॥ २१ ॥

श्रीमितां वसिष्ठं गतनिर्मलवयनं ॥ ३ ॥ अहमहाहयहवहयंकयन ॥
 श्रीउयनाकस्यसुनयपूजितं ॥ ४ ॥ अहदभयसिहवस ॥ ५ ॥ नगचित ॥ मा
 धवसिहगंगभकुकिथिसंनिवाच ॥ ५ ॥ ॐ तिथीश्रुपयनसुं समाकं ॥
 ७ ॥ २७ ॥ अंनमाश्रीश्रुपयनसुं समाकं ॥ ७ ॥ अंनमासाकनां थय ॥
 ॥ ६ ॥ वमनयांसुनतवयनं ॥ उतिहहजमजनायुजमयनं ॥ १ ॥ साकसलमाससु
 पंनयककृपायकूलकय ॥ १ ॥ समाधादधिमधनिमयनं ॥ २ ॥ अमहमि
 समाहिरुगं ॥ सामवधिययमविचवकं ॥ अहिमहाकृतासमविचकं ॥
 २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 गवननवताकसा ॥ जावकविहिवियामितविषमा ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 हुनमरुयं ॥ हुनमराता ॥ अलिसहसं ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥
 यंसंयकिकायकइरुवं ॥ ४ ॥ ५ ॥ ६ ॥ ७ ॥ ८ ॥ ९ ॥ १० ॥ ११ ॥ १२ ॥ १३ ॥ १४ ॥ १५ ॥ १६ ॥ १७ ॥ १८ ॥ १९ ॥ २० ॥ २१ ॥ २२ ॥ २३ ॥ २४ ॥ २५ ॥ २६ ॥ २७ ॥ २८ ॥ २९ ॥ ३० ॥ ३१ ॥ ३२ ॥ ३३ ॥ ३४ ॥ ३५ ॥ ३६ ॥ ३७ ॥ ३८ ॥ ३९ ॥ ४० ॥ ४१ ॥ ४२ ॥ ४३ ॥ ४४ ॥ ४५ ॥ ४६ ॥ ४७ ॥ ४८ ॥ ४९ ॥ ५० ॥ ५१ ॥ ५२ ॥ ५३ ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ ५६ ॥ ५७ ॥ ५८ ॥ ५९ ॥ ६० ॥ ६१ ॥ ६२ ॥ ६३ ॥ ६४ ॥ ६५ ॥ ६६ ॥ ६७ ॥ ६८ ॥ ६९ ॥ ७० ॥ ७१ ॥ ७२ ॥ ७३ ॥ ७४ ॥ ७५ ॥ ७६ ॥ ७७ ॥ ७८ ॥ ७९ ॥ ८० ॥ ८१ ॥ ८२ ॥ ८३ ॥ ८४ ॥ ८५ ॥ ८६ ॥ ८७ ॥ ८८ ॥ ८९ ॥ ९० ॥ ९१ ॥ ९२ ॥ ९३ ॥ ९४ ॥ ९५ ॥ ९६ ॥ ९७ ॥ ९८ ॥ ९९ ॥ १०० ॥

अयनवयन ॥ २२ ॥

तिरुसुं १२ तं लक ४५ समय समं ॥ वांचिक नयकं चित्रस्मात् ॥ ५ ॥ सत्त्व
 नायक चित्रमहितां ॥ साय नूनमादितमपि पयिहितं १२ तदिदं निमसमान्य
 स्यापं ॥ हतयनाथक लास विनापं ॥ ३ ॥ ५ वमनय्यां सज्जगृह ॥ तिर्क
 नयकं पतगतिना १ सत्त्वजनिवसंति सदा ॥ यकृ सितानि किर वस्म विवाता
 ॥ १ ॥ तनमहापयि सज्जक नून्य ॥ विकृ सती नागत काय ॥ २ ॥ ६ तिर्क नून
 गवनूरु मसि रुनामि ॥ आवक नयक नो स्म विस्वामि ॥ ८ ॥ किं चाधिका
 नाहियतां ॥ मंचसि रुगावनमाम किताथ १ अथवापक कदात वपून्य ॥ ५
 नयसि धिधकथं मपि यून्य ॥ ६ ॥ समयन्य नापिरुसिक पयिउरुं ॥ क
 पयसिक नून्य किं मकि मरुता १ रुसा हत रुगावन पयहि नयक ॥ कमाक
 नूमाहित नयक ॥ १० ॥ दकि उयं जन पूरु कनाप ॥ नाधम कं थक स्य स्म वि
 चिउं १ मासा तिसि नासि पयिधरं ॥ हवता थि ना रुकुम नकं ॥ ११ ॥

मूज नगुतिका पादक सिद्धा ॥ सिद्धा धिम धिमं ज विधु धि १ सिद्धु ज एति
 नपय दस ॥ उरु रुज सत्वं ता कसा ॥ १२ ॥ ऊक यचय न विना च नहिना ॥
 विविधिया धिम हारु यदिना १ हतय उरु पूरु सती ना ॥ विन संत नूजा मु
 नहिना ॥ १३ ॥ गप उवाधियग रुज किनि धयां तियां ति सदा यागिनी
 १ अयति नित्य पूना ऊम इरुं ॥ पीत्यं स्य सज्जि नरुत् ॥ १४ ॥ ६ तिर्क लक
 यकिं धी यमानं १ मंचसि रुगावनमाम किताथ ॥ मोसि रुम नदिन मदिन पति
 ॥ नासय ज स माकू नूपाति ॥ १५ ॥ धिधि ६ ६ ६ डिय चं चय म न सा ॥ कत व
 कृपापं या कृत् वपूषा १ निरुं ऊम मया सिन स कतं ॥ ऊथय जनि सि सं रु
 वतां विकलं ॥ १६ ॥ तक्रू नू संपति मम लाक ॥ ५ नश्चा विविध कलितं
 मया १ ऊन रुत्वा पायिक इरुं ॥ सगति रुवा ध्याय सिन माक ॥ १७ ॥
 माह मद्र धिना सन रुं ॥ १८ ॥ ससाय म हा क धि स्य रु १ उति उत रुत्

पनवाङ्ग १२ त्वं गुणवित्तिसागपवाङ्ग ॥ १८ ॥ दसिगसगतां नरुयत त्वं त्वं
 वित्तवङ्ग १३ वित्तसङ्ग १४ निजित्त १५ यमममममाया ॥ त्वंसक्तिरुहवानवपाय
 ॥ १९ ॥ सकयजगननिकिचनदहा ॥ त्वंप्रिमधियजगनसदहा २० ॥ नीलाधि
 गवनमनपयकननासिंधुजगनविविधकायनबंध ॥ २० ॥ नीलाधि
 तयित्तकर्ध्वविहंग ॥ त्वंप्रहिरविषयवासंघा २१ दिव्यधनसमानसचि
 तं ॥ त्वं यच्चकसाधनचिंतं ॥ २१ ॥ ययमखकूर्वा नपिकननावा ॥ मयि
 प्रयिताषनकनातिरुहवा २२ कंधमिहमाहमहायगदध ॥ विषयस
 योनाङ्ग २३ यं हव्यध ॥ २२ ॥ संकयजगनार्थप्रतियाकनना ॥ निरुहवध
 नियतयस्त्रयना २४ ननयकसिषद्विषवक ॥ रुगवनपयस्त्रयमावि
 यवकं ॥ २३ ॥ नाथकियादावास्मि विसायासं वज्जितां वज्जधयध
 ना २५ यजगनस्मिन्नित्तवङ्ग २४ ॥ सनतिमियजगनमसिसमस्यध ॥

॥ २४ ॥ ॐ हिरण्यवर्णसमयं जनः ॥ जस्यैवममर्तजनः ॥ नूनं ह्येतां २ ॥ अधिपतयकां
चनवासं ॥ जनयतु संदय विविधिविजासुधीमत् ॥ २५ ॥ ॐ हिरणी आर्यावर्ण
किं सत्यस्य च यपतिपावित्रं चिंतुं संसमायं ॥ २६ ॥ २८ ॥ ॐ नमो
३ ॥ उत नमस्तु कस्य दार्यावर्ण किं सत्ययः ॥ विस्वविभ्रमनविनिर्जितं द
रुक्कनवयवयविजाजितं ॥ सततसूनयतिमोपि जाजितपादयंकऊह २ ॥ संव
हकृतं यष्टं सत्यसिद्धं संयुज्यमिज ॥ कृतमनसिद्धिविविधमनिगनदहम
धुनः इति खं धुनह ॥ १ ॥ अदिमोपिमितां हृदयनसुकयनिपंजनः ॥ ख
तायनः ॥ विपूयकमयनिः साकनासनसमनसासनह २ ॥ वायुमखकृतचन्द्र
हासनवज्रसंगितिकृतनिवासनविप्रचयहृयकृतनिवासनललितलस
नह ॥ २ ॥ पासनिस्त्रिसंस्कृतासंगवायव्यहिरण्यपातितयद्रुगयकच
नूनकृतसंभवनसुजनयजनह २ ॥ नूनकृतसमसावमिनसदस्वकृत

नृपयवास्तनपयजागतिर्जितविधिमनियरुहकसुखकयह ॥ ३ ॥ नामदकि
 मरुहकटिनापिनिलकनयवयवास्तनयसंगयंगसुखवायनितनृपनियपस
 मानह ॥ २ ॥ नयनविमयस्वाजसुदयधुतिविनिन्दितललितमधुलकामिनिर्ज
 नमानहपकविप्रदायकह ॥ ४ ॥ विविधवृत्तिभुसिद्धिदयकमज्जनमधुव
 धियायकसायललीतविहाकितस्वयमहन्दनस्वयह ॥ ५ ॥ वृत्तपुडुहपिंडध
 नयतिपुपतर्जयसुकलनययतिहायपविहृत्तनयकातकिविवधसुमह
 ॥ ५ ॥ पुनसुमचयनृवहविहचयनरुगजनरुवनपावितवेलेवयनृप
 समयधातकिहाययापितह ॥ ६ ॥ नृपविपुचिंतिमिदपूनसर्वजनवजन
 यनकायनरुहयवायविवायधयनठिगुनययनह ॥ ७ ॥ रुवनभृष्टवि
 नासपायनइष्टदिशुकिहृत्तविजापनवृत्तविहृमहमहावनकप्रिविद्य
 कनह ॥ ८ ॥ दिदधयनपमरवयनजननसंहृतिजनितहयनवंडिसंप्रकिस

किंविहयनसिद्धिवनह ॥ १ ॥ चक्रवर्तभृहदकायननिखिचंदसुखसु
 वाधकगगधमधुलनगनयकपभसायकह ॥ २ ॥ पवनगमननिहाधसाधक
 कथिननिखिलनियकवाधककलनपुपसाजिवहायकविप्रदायकह ॥ ६
 जागपनिचिक्तिविजितयतीपतिहागसंगितिरुवकिहृत्तनकिहृत्तनमानस
 रुष्टरुक्तिदिनजनगतिह ॥ २ ॥ मरुहकसुनयितमोमीमधुलगुमभित
 विमलकुंभुलविपुनरुजवयविजितरुत्तयकमलनिर्मलह ॥ ९ ॥
 कविन्दमनुपतापनयपतिसुकलगुनचयधुसुमकिप्रचितमस्यमहा
 पुवर्तनमृद्विधनह ॥ २ ॥ वृहतिहितमतिविहृत्तमचितसुहृत्तसुम
 रुहृत्तममिहयतिसुहृत्तवसुचितममयसंमिहह ॥ १० ॥ धृतिशीमहा
 यजाधियाजकविन्दययुकासमहृविपचिंतसमाकं ॥ १२ ॥ २० ॥
 पुनमाधुसुयंरुपमहस्वयय ॥ मरुहकहृत्तमयवर्तजिविधय

मरुहकह ॥ ३० ॥

30

2.5

2.0

1.5

1.0

0.5

0

0 CMS 5 10 15 20 25 30 35 40 45

संगलक्षणम् २१

नजरूपकभविंदली २३ यपतापमद्वयविचिंतनीस्यंरुकायक
 स्यात्तुं समापं ४ ॥ २० ॥ अनभामंरुनांथाय ४ मंरुलीलाकसाथी
 जिनवमकृतांजवसादिसव मेगीयावर्जपातिशुखवचहिकतात्राकृता
 दुपाता ॥ वृद्धावेताचनायगीहवननमितंकिंलनिस्यखरखा ॥ ५ ॥ रुक्मा
 सवार्थसिधिविमयथुमयसंमंगलंवाधिसव ॥ १ ॥ हंसाकृतालवजपथ
 पतिदमकावजपंथअरुक्मा पिताहनाकृताजातिपगनमथनातर्कनिजा
 महत्मा ॥ अकृतायलककुपतिदिनमचलगन्धहसजमाल ॥ रुक्मास ॥ २
 संपंतेलाकबंधुगुभाभनानिलयाधाधिविनासुचिता ॥ वंशसास्यंद्रया
 जाविजितजिनगुभाहनाप्रिगंध ॥ वंशसायद्रयाक विवितकलिमला ॥ स
 वंसलानकंया ॥ रुक्मास ॥ ३ ॥ पृथ्वंदावदनातजुजुरुकटिहानसंकाज
 ताना ॥ मालिचिमायमानासकलरुयहनापितवर्धुडीवक ॥ मायूनीमामकिं

चक्रपितपिपूगनापांरुलाभाचनाड ॥ रुक्मास ॥ ४ ॥ गर्भधनीजांगुलिसरु
 जनहितकना ॥ खजपाभाकृताप्रवापाहिवजुरुक्मा ॥ असिरुलभुद्रनाध
 र्मधतस्वपिचकपूरीहनसुवा ॥ रुक्मनहितकनाखजपाभाधपिच ॥ रुक्मा
 स ॥ ५ ॥ विप्रामात्यास्वर्धवतनापतिनजिनवल ॥ अवलधयवकाव
 तालिपथवजपुहसितवदना ॥ स्वर्गतआर्याकृता ॥ लसिवाधस्यवाधे
 ॥ सकलरुयहनासापधिधि ॥ पवर्ज ॥ रुक्मास ॥ ३ ॥ वेभासाधर्मचकुं प
 तितजिनलपवर्त ॥ शुधकाटि ॥ अवसांपविनिधुपितहितकनकार
 नवाधिविद ॥ श्रीमसंदावतनाधुपवसनमितं ॥ श्रीरुलंसंखचकुं ॥ रुक्मा
 स ॥ ७ ॥ रुंठंधजवाधपमंधजवसनमितं ॥ साचनामरु ॥ सूर्य ॥ वायाहि
 कृर्धकंरु ॥ मनिवपवचनं ॥ वजपंथानिक्षनावृक्षनांपातिहास ॥ सयव
 पनमितं ॥ हास्यनास्यविनास ॥ रुक्मास ॥ ८ ॥ रुंतिश्रीमंगलाचयनतडा

लाउंसमाफं॥ ३१ ॥ यधर्माहुरुप्रवाहउतपांतथागत॥ हवदहवां
 चयानिधाधुववादिमहाधुवनं॥ ३२ ॥ निरितंथरिदितालका
 पवाहलसविष्ठाकमशीवऊचार्यजागवऊनंलिखायितायानरूतुहं॥
 ऊदिभुर्वाभूसंधवासमदारवनदियन॥ ३३ ॥ ॐ मंजुलंरुवकुसर्तु
 काय॥ ३४ ॥ हयान् ॥ ३५ ॥ ॐ ॥ ३६ ॥

१७७	१	१७८	२२
१७८	२	१७९	२३
१७९	३	१८०	२४
१८०	४	१८१	२५
१८१	५	१८२	२६
१८२	६	१८३	२७
१८३	७	१८४	२८
१८४	८	१८५	२९
१८५	९	१८६	३०
१८६	१०	१८७	३१
१८७		१८८	
१८८		१८९	
१८९		१९०	
१९०		१९१	
१९१		१९२	
१९२		१९३	
१९३		१९४	
१९४		१९५	
१९५		१९६	
१९६		१९७	
१९७		१९८	
१९८		१९९	
१९९		२००	

[illegible]

१५३५

२२१

42

13

रि. ११ पा १२।५

卷之三

